An Enlightened Woman

संस्कृता

SNDT WOMEN'S UNIVERSITY
Estb:1916

Volume 1 | Issue 3 | May 2022

SANSKRITA - DIALOGUE 2

Hello everyone, it is a pleasure to write dialogue-2, as a part of a communication between you and me. National Education Policy is round the corner. Bit by bit we are trying to not only understand it but also trying to implement it the way we can at our own level. The teachers have a very important role to play while implementing the policy in its true spirit. Chapter 5, from page number 20 to 24 of this small yet very meaningful document, deals with teacher and teacher education.

Recruitment, deployment, service environment, professional development, career management of a teacher, professional standards for teachers, special educators for special needs of the students and approach to teacher education, all these issues related to teachers have been covered in these pages.

The policy also gives complete freedom to the teacher for designing the curriculum. The teacher can also design a method of teaching as per the need of the student. Every student has a different learning ability. The teacher should be able to make learning happen within the student at his or her pace. With Freedom comes responsibility. Are our teachers equipped to take up such responsibilities is the real question. The training programs need to be designed to make teachers sensitive and critical thinkers, so that they can create innovative students.

SNDT WU specialises in teacher education, education Technology and Inclusive Education; with the help of these departments the rest of us can learn to teach better. Ideal modules of teaching can be produced and shared as success stories; which can be emulated by the rest of us in our teaching learning processes.

Academic excellence to be achieved is possible only through changes in the teachers. Let us all strive for academic excellence at SNDT WU.

✿ **Prof. Ujwala Chakradeo**
Vice Chancellor
S.N.D.T. Women's University

This Month....

This month saw the birth anniversary of three great social reformers- Baba Saheb Ambedkar, Mahatma Phule and Maharashi Karve. These reformers shaped the world of education for women in their own ways. They faced a lot of difficulties in their lives but made our path easy for which we always remain grateful to them. A number of seminars, conferences and workshops were organized in all three campuses to commemorate these three great social reformers.

The academic year has come to an end. Its vacation time for both the teachers and the students. But in this new normal, things are happening in haphazard manner. After a few agitations & voice raising everyone is now settled with the hope to see a regularized next academic year.

However, vacation this year may not mean "No activity" period. There is going to be a lot of activity in this month for making preparations for implementation of NEP 2020 and SNDT WU Vision 2022-26. Busy days due to admissions & exam related work are also ahead.

Remaining next time...

✿ **Prof. Ruby Ojha**
Pro - Vice Chancellor
S.N.D.T. Women's University

संपादकीय

संस्कृता का तीसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह अंक विषय केंद्रीत होकर लिखा जा रहा है। इस माह में तीन महापुरुषों की जयंतियाँ आईं। पहली ११ अप्रैल महात्मा ज्योतिबा फुले की, १४ अप्रैल भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर की, 18 अप्रैल भारत रत्न महर्षि डॉ. धोंडो केशव कर्वे जी की। इन तीनों महापुरुषों के अथक प्रयासों और संघर्षों का परिणाम है कि आज स्त्री स्वावलम्बन के साथ जीवन जी रही है। स्त्रियों को शिक्षित करने, उनको आत्मनिर्भर बनाने एवं सशक्त समाज बनाने का जो प्रयास उन्होंने किया, वह सराहनीय है।

महाराष्ट्र के दलित समाज में राजनीति एवं सामाजिक जागृति फैलाने के लिए महात्मा ज्योतिबा फुले ने अथक प्रयास किए। अपने अनुभव से उन्होंने पाया कि दलित समाज में अगर कोई कमी है तो वह है जागृति एवं शिक्षा की। उन्हें लगा कि अस्पृश्यता व जाति-व्यवस्था के कारण शूद्र लोगों को आगे नहीं बढ़ने दिया जा रहा है। अत: उन्होंने दलितों और अन्य शूद्र जातियों को संगठित एवं शिक्षित करने का दृढ़ संकल्प लिया और दलितों में शिक्षा का प्रसार कर उन्हें अंधकार से निकालने के लिए नारा दिया - 'गुलाम को शिक्षा दो वह क्रांतिकारी बन जायेगा।'

दलित शिक्षा एवं मजलूम लोगों में चेतना व जागृति पैदा करने के लिए उन्होंने सन् १८४८ को पूना में शूद्रों और स्त्रियों के लिए देश का पहला स्कूल खोला। तमाम विरोधों के बावजूद ३ जुलाई १८५१ व १५ मई १८५२ को क्रमश: दूसरा, तीसरा दलित स्कूल खोलकर ज्योतिबा फुले बहुजन क्रांति व सामाजिक जागृति के मसीहा बन गये। १९ वीं सदी के मध्यकाल में मराठी भाषा और साहित्य का बढ़ावा देने का श्रेय फुलेजी को है। ज्योतिबा फुले ने २३ सितम्बर १८७३ को पूना में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। इस संगठन ने सर्वहारा, शोषित एवं पीड़ित वर्ग के लोगों की मुक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किये। उन्होंने जो ज्योति १८४८ में जलाई थी, वह आज भी जल रही है और उसके बाद बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी ने आजीवन संघर्ष किया।

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बडेकर एक ऐसी हस्ती थे, जिन्होंने देश के करोड़ों पददलितों को ही नहीं वरन् समूचे भारत देश तथा सम्पूर्ण विश्व को बहुत कुछ दिया है। बाबा साहब इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि 'प्रजातांत्रिक व्यवस्था' तब तक पूर्ण रूप से सफल नहीं हो सकती, जब तक इस देश के मतदाता पूरी तरह शिक्षित व योग्य न हो जायें और उन पर किसी भी तरह का दबाव, प्रलोभन और भय का प्रभाव न पड़े।'

अम्बेडकर जी के कारण ही आज स्त्री सम्पत्ति, शिक्षा और समाज में हिस्सेदारी पा रही हैं। अम्बेडकर जी गुलामी की जंजीरों में जकड़े मनुष्य को विद्या, ज्ञान और सूझ देकर, जीने की राह दिखाते हैं। मानवीय सम्मान, आजादी, समानता, भाईचारा और न्याय पर आधारित जाति एवं जमाती रहित समाज की रचना व सामाजिक समानता इनका लक्ष्य है।

भारत रत्न महर्षि डॉ. धोंड़ो केशव कर्वे प्रसिद्ध समाज सुधारक थे। उन्होंने महिला शिक्षा और विधवा विवाह में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने विधवाओं को शिक्षित बनाकर अपने पैरों पर खड़ा किया ताकि वे सम्मानपूर्वक जीवन बिता सकें। उन्होंने अपना जीवन महिला उत्थान को समर्पित कर दिया। उनके द्वारा मुम्बई में स्थापित एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय भारत का प्रथम महिला विश्वविद्यालय है। १८९६ ई. में उन्होंने 'अनाथ बालिकाश्रम एसोसिएशन' बनाया और जून १९०० ई. में पूना के पास हिंगणे नामक स्थान में एक छोटा सा मकान बनाकर 'अनाथ बालिकाश्रम' की स्थापना की। ४ मार्च १९०७ ई. को उन्होंने 'महिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की, जिसका अपना भवन १९११ ई. तक बनकर तैयार हो गया।

1916 ई. में महर्षि कर्वे के अथक प्रयासों से, पूना में महिला विश्वविद्यालय की नींव पड़ी, जिसका पहला कॉलेज 'महिला पाठशाला' के नाम से १६ जुलाई १९१६ ई. को खुला। महर्षि कर्वे इस पाठशाला के प्रथम प्रिंसिपल बने। धन की आवश्यकता पड़ने पर मुम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति सर विठ्ठलदास दामोदरदास ठाकरसी ने इस विश्वविद्यालय को १५ लाख दान दिए। अत: विश्वविद्यालय का नाम भी ठाकरसी की माता के नाम श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी (एस.एन.डी.टी.) महिला विश्वविद्यालय रख दिया गया और कुछ वर्ष बाद इसे पूना से मुम्बई स्थानांतरित कर दिया गया।

इन तीन महापुरुषों के अथक प्रयासों से हुए कार्यों और उनके जीवन पर दुष्यंत जी की यह पंक्ति चरितार्थ होती है -

"सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"

ऐसे महापुरुषों को एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय परिवार नमन करता है।

✿ **टीम संस्कृता**

EDITORIAL BOARD MEMBERS

- Dr. Subhash Chavan
- Dr. Sunita Sakhare
- Dr. Sachin Deore
- Dr. Nilesh Thakare
- Dr. Aruna Dubhashi
- Dr. Rajendra Gurao
- Dr. Darshana Oza
- Dr. Jitendra Tiwari
- Dr. Jaswandi Wamburkar
- Dr. Dhrupadi Chattopadhyay
- Dr. Dharmaji Kharat

TECHNICAL ASSISTANT :

- Mr. Balu Rathod
- Mr. Mehul Khale

अध्ययन - अध्यापन हे ' या हृदयातून त्या हृदयी ' झाले पाहिजे
कुलगुरू डॉ. उज्वला चक्रदेव यांचे प्रतिपादन

एक शिक्षकच समाजासाठी व देशासाठी उत्तम भावी नागरिक तयार करू शकतो. तो देशाचे भवितव्य घडवित असतो आणि जर का तो त्याच्या कार्यात कमी पडला तर संपूर्ण पिढी बिघडू शकते म्हणून त्याने सदैव सजग राहून अध्ययन-अध्यापनाचे कार्य केले पाहिजे.सोबतच शिक्षकांचे अध्ययन-अध्यापन हे 'या हृदयातून त्या हृदयी' झाले पाहिजे" असे प्रतिपादन एसएनडीटी महिला विद्यापीठाच्या कुलगुरू डॉ.उज्वला चक्रदेव यांनी पीव्हीडीटी कॉलेज ऑफ एज्युकेशन फॉर वुमन मधील भावी शिक्षीकांशी संवाद साधतांना केले.

यावेळी बोलतांना त्या म्हणाल्या अध्ययन अध्यापन हा केवळ बौद्धिक व्यवहार नाही किंवा केवळ विषयाचे ज्ञान देणे एवढ्यापुरते मर्यादित नाही तर आज इंटरनेटच्या क्रांतीमुळे सर्व विषयाची भरपूर आणि अद्यावत माहिती विद्यार्थ्यांना एका क्लिकवर उपलब्ध असतें, त्यामुळे शिक्षकाने केवळ ज्ञानादानावर अवलंबून न राहता बौद्धिक विषय ज्ञानाच्या पुढे जाऊन शाळेतील मुलांच्या मनाचा, भावनेचा आणि बुद्धीचाही सजगपणे विचार करून त्याचा विकास करण्यावर भर दिला पाहिजे. यासाठी आजच्या शिक्षकाकडे अनेक विविधांगी क्षमता व कौशल्य असणे आवश्यक आहे.

शिक्षकांमधील सर्वात महत्वाचा गुण म्हणजे करुणा, हा गुण प्रत्येक शिक्षिकेकडे असला पाहिजे. आईच्या मायेने विद्यार्थ्यांच्या मनाचा शोध घेऊन त्याचा विकास साधण्याची क्षमता शिक्षिकेकडे असणे आवश्यक आहे . स्त्रीमध्ये उपजतच मातृत्वाचा भाव असतो तो तिने शिक्षिका म्हणून आपल्या विद्यार्थ्यांसाठी, आपल्या अध्यापनातून, मार्गदर्शनातून, रुजवला पाहिजे. मातृत्वभाव फक्त स्त्री मध्येच असतो असे नाही तर तो पुरुषांमध्ये ही असतो. मातृभाव प्रयत्नपूर्वक जागृत करावा लागतो तेव्हा पुरुषही माऊली होऊ शकतो. त्यासाठी महाराष्ट्रात राहणाऱ्या प्रत्येक शिक्षिकेला मराठीतून संवाद साधता आला पाहिजे.

यावेळी प्र-कुलगुरू प्रो.रुबी ओझा, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळाचे संचालक डॉ संजय शेडमाके, प्रभारी प्राचार्य डॉ. सुभाष वाघमारे तसेच महाविद्यालयातील प्राध्यापक डॉ सिद्धार्थ घाटविसावे, डॉ भूपेंद्र बनसोड, डॉ महेश कोलतमे, डॉ अमोल उबाळे, डॉ राकेश रामराजे व डॉ प्रतिभा उरसल उपस्थित होते. डॉ केदार देवरे यांनी उस्फुर्तपणे कार्यक्रमांची प्रस्तावना केली व शेवटी आभार मानले. वर्गातील सर्व भावी शिक्षिका मा. कुलगुरूच्या सोबत झालेल्या आंतरक्रियात्मक संवादातून फारच प्रभावित झाल्या.

ANNUAL ART EXHIBITION AAVISHKAR 2022 OF BVA DEPARTMENT

AAVISHKAR 2022 of BVA Department of SNDT Clg of Arts & SCB Clg of Commerce & Science for Women and the 15th Annual Art Exhibition of MVA Department of Drawing and Painting was inaugurated by Dr. Sonali Rode, Joint Director (Higher and Technical Education, Govt of Maharashtra), Ms. Gargi Trivedi, HOD (Fashion Design Textile Designer, Illustrator and Expert in Fashion Design)on 21 st april 2022 in the presence of Principal Dr. Rajendra Gurao.

82 students from both the departments exhibited their art work in the exhibition.

Camlin Kokuyo sponsored the prizes to award winning students

State Level Best NSS Volunteer Award for the year 2019-2020

Ms. Pratiksha Vilas Adam student of Smt. P. N. Doshi Women's College, Ghatkopar received the State Level Best NSS Volunteer Award for the year 2019-2020 from Mr Uday Samant, Hon'ble Minister, Higher and Technical Education, Govt of Maharashtra at the NSS State Level Award Distribution Ceremony on April 25, 2022 held at SNDT Women's University, Mumbai.

Participation of Ms. Swaranjali Panchal in 'Akhil Bharatiya Marathi Sahitya Sammelan'

Ms. Swaranjali Panchal, Student of MA Music Part I, presented a ghazal in the 'Akhil Bharatiya Marathi Sahitya Sammelan' at Udgir, Maharashtra on 23 April 2022.

प्रा. डॉ. धर्माजी खरात हे IGNOU मधून एम. ए. (उच्च शिक्षण) प्रथम श्रेणीत उत्तीर्ण

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विद्यापीठ, नवी दिल्ली (IGNOU) या विद्यापीठातून प्रारंपारिक पध्दतीने परिक्षा (Traditional Exam Mode) देऊन एम.ए. हि पदव्युत्तर पदवी डॉ. खरात यांनी प्रथम श्रेणीत जुन २०२१ ला उत्तीर्ण केली आहे. उच्च शिक्षणासाठी कार्यरत असलेल्या एस.एन.डी.टी. महिला विद्यापीठाचे सिनेट सदस्य म्हणून डॉ. खरात कार्यरत आहेत. डॉ. खरात हे इंग्रजी विषय एस एन डी टी महिला विद्यापीठात जुलै २००३ पासून शिकवत आहेत.

Reuse Plastic For Better Tomorrow Exibition held

Plastic pollution is one of the major concerns all over the world. The First Year Bachelor of Home Science (FYBSc.) students of Dr. BMN College of Home Science have shown that each problem has a solution. They understood the concern of our mother earth and communicated their creativity and innovations with her. As a part of their Extension and Communication subject and in collaboration with NSS Unit and Environmental Sensitization Committee, FYBSc. students made 70 useful products out of waste plastic which people mostly use once or throw. The variety of products included stitched mats, shopping bags, piggy bank, puppets, water filter, colour palate, bird feeder, plant holder, pen/mobile holder, skipping rope, jewellery (earrings, necklace, choker & bangles), jewellery box, toran, spices containers, table, organizers, apron, basket, pouch and many more…. The main objectives of making these products were to reuse plastic and to come up with innovative products which can be beneficial to the general audience. All the products were displayed on 8th April, 2022 from 11:30 am to 01:30 pm in the BMN College foyer. In these 2 hours, more than 100 people visited the exhibition and shared their positive feedback. It is very true that when students are appreciated, motivated and respected their dynamics are manifested.

FYBSC Batch 4

Guest Lecture on "How to Become a Successful Police Inspector"

Savitri Competitive Examination Cell of the SMRK BK AK Mahila Mahavidyalaya of Nashik organised a guest lecture on "How to Become a Successful Police Inspector" by Mrs.Manik Patki, Police Inspector, Detective Training School, Nashik dated on 04.04.2022.

Dr. Satish Dhanawade, Coordinator of Savitri Competitive Examination Cell introduced the guest. Then winners of the Quiz Competition organised by library of the college to celebrate "Azadi ka Amrutmahostav" were awarded certificates.

Vice-Principal Dr. Mrs. Neelam Bokil has given brief introductory speech to audience. Mrs.Manik Patki's address to the students and staff. Her inspirational speech unfolded the struggles she faced in the process of her becoming a police inspector.

She also explained the thorough procedure for the selection. Her address was fully motivational & inspirational. Mrs.Yamini Galapure, librarian proposed the vote of thanks. Mrs.Trupti Dhoka anchored the session.

Informative Lecture on "Career Katta"

Savitri Competitive Examination Cell of the SMRK BK AK Mahila Mahavidyalaya of Nashik organised a guest lecture by Mr.Yashwant Shitole , President, Maharashtra Information Technology Support Centre dated on 11.04.2022.

Dr. Satish Dhanawade, Committee In-charge and college level coordinator of "Career Katta" introduced the guest. Mr. Sandeep Tile, District Coordinator of "Career Katta", Mrs. Seema Baji, District Coordinator for Technical Section of "Career Katta", and Mr. Manish Sonawane, coordinator for "Career Katta", Nasik Rural were also present for the occasion. Vice-Principal Dr. Mrs. Neelam Bokil has given introductory speech and she also has told brief history of the college.

Mr. Yashwant Shitole informed about the various programmes run under "Career Katta". He has appealed to the students to take initiatives to join the various activities. His address was well received by the students. Mrs. Yamini Galapure, the librarian proposed the vote of thanks. Ms. G.V.Gitay anchored the session.

Prof.Ujwala Chakradeo conferred Awards and Degrees to the successful students of Satyam Group of Institutions, Noida

The Graduation Ceremony of the pass out graduates of year 2021 of Satyam Fashion Institute, School of Journalism and Mass Communication and Satyam College of Education was organized in the campus of Satyam Group of Institutions at Sec-62, Noida on 31st March, 2022. 87 students of B.Ed., 64 students of Fashion and 12 students of Mass Media were awarded Degrees on this occasion.

Prof.Ujwala Chakradeo, Hon'ble Vice Chancellor of SNDT Women's University, Mumbai was the Chief Guest of the Graduation Ceremony. She conferred on the Awards and Degrees to the successful students.

Ms. Khyati Arora and Ms. Charu Batra achieved Gold Medals at the University level in Fashion Design and Lifestyle Accessories respectively. Ms. Saloni Garg of Textile Design and Ms. Kanak Tripathi of PG Diploma in Fashion Design got 1st positions in their courses. Ms. Kirti Sinha got 1st position in B.A. (Mass Media).

Mrs. Sneh Singh, the Chairperson of Satyam Group of Institutions; Trustee Secretary, Mr. Pradeep Gupta; Dr.Bineeta Agarwal, Principal, Satyam College of Education; Dr.Vandana Jaglan, Principal, Satyam Fashion Institute; Dr. Neetu Malhotra, HOD, SFI; Dr. M. Alam, Dean, School of Journalism and Mass Communication; Ms Priyanka Sarkar, Programme Head, SJMC; parents; guardians of students and dignitaries were present in the ceremony.

The Ceremony began with the ceremonial lamp lighting by the Chief Guest, Trustees and dignitaries thereafter the recitation of National Anthem and SNDT Women's University song followed by the Welcome Address and Presentation of Annual Reports by the Principal of Satyam College of Education; Dr. Bineeta Aggarwal and Principal of Satyam Fashion Institute; Dr. Vandana Jaglan. Then, an encouraging address by the Chief Guest, Hon'ble Vice Chanceller ma'am was highly motivating for all the graduating students. The degrees and awards were distributed to the passout students of B.Ed., B. Design, PG Diploma in Fashion Design and B.A.(Mass Media) Under the 'Earn while you learn' scheme of SFI and SJMC, the students were also conferred with Certificates and Awards during this ceremony.

Dr.Neetu Malhotra, HOD, Satyam Fashion Institute delivered the Vote of Thanks to all the dignitaries for the day.

Maharshi Karve Stree Shikshan Sanstha's Colleges Annual Convocation held at Narhe

The Annual Convocation of MKSSS' s Colleges Affiliated to SNDT Women's University for its B. Design, BCA, BA, & B.Com Courses was organized on 3 April 2022 at MKSSS's School of Fashion Technology, Narhe Campus.

The Total number of students who participated through online and offline modes were 650.

Shri. Uday Samant, Hon. Minister Higher and Technical Education, Government of Maharashtra, presided over the function as a President and Hon Vice-Chancellor SNDT Women's University Mumbai graced the occasion as the Chief Guest. Students those who were received the degrees were enlightened with the encouraging speeches of these dignitaries.

Mr. Ravindra Deo, Chairman of MKSSS, and Ms. Vidya Kulkarni, Vice Chairperson of MKSSS conveyed the function.

भारतरत्न डॉ बाबासाहेब आंबेडकर, महात्मा जोतिबा फुले व भारतरत्न धोंडो केशव कर्वे संयुक्त जयंती कार्यक्रम

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर अध्यासन, एस. एन. डी. टी. महिला विद्यापीठ, मुंबई द्वारे "महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, महर्षी कर्वे यांचे विचार आणि स्त्रियांची सद्दस्थिति" या विषयावर १८ एप्रिल रोजी कार्यक्रम कमिटी रूम, चर्चगेट कॅम्पस मध्ये घेण्यात आला. कार्यक्रमाचे व्याख्याते मा. ज्ञानेश महाराव होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षा प्रा. उज्वला चक्रदेव, कुलगुरू, एस. एन. डी. टी. महिला विद्यापीठ, मुंबई होत्या.

कार्यक्रमाची सुरवात विद्यापीठ गीत गाऊन झाली. प्रतिमापूजन झाले. सर्व पाहुण्यांचे पुष्पगुच्छ देऊन स्वागत करण्यात आले.

डॉ. संजय शेडमाके यांनी कार्यक्रमाची प्रस्तावना मांडली. त्यानंतर आजच्या कार्यक्रमाचे प्रमुख व्याख्याते मा.ज्ञानेश महाराव यांनी आपले विचार सर्वांसमोर मांडले. पूर्वीच्या काळात महिला कठोर परिस्थिती मध्ये शिक्षण पूर्ण करून पुढे आल्या. सावित्रीबाई फुले व इतर महिलांचे उदाहरण त्यांनी या वेळी दिले. त्यांनी महिलांना वैज्ञानिक वृत्ती वर भर देण्याचे अव्हान केले.

कार्यक्रमाच्या अध्यक्षा प्रा. उज्वला चक्रदेव, कुलगुरू, एस. एन. डी. टी. महिला विद्यापीठ, मुंबई यांनी महर्षि कर्वे यांच्या भूमीमध्ये आपण पाऊल ठेवल्यानंतर स्वत:ला जी ग्वाही दिली की आपण जो महर्षी कर्वे यांचा वसा आहे तोच पुढे नेहणार असल्याचे त्या बोलल्या. स्त्रीशक्तीचा महिमा त्यांनी खूप उत्स्फूर्तपणे सगळ्यांसमोर मांडला व आपले भाषण थांबवले.

प्र.कुलगुरू, प्रा. रूबी ओझा व कुलसचिव (अ. भार) डॉ. वंदना शर्मा यांची विशेष उपस्थिती या कार्यक्रमास लाभली. आभार व्यक्त करत कार्यक्रमाची समाप्ती झाली.

भारतीय सद्सद् विवेकाचा मानदंड

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर हे नाव नव्या भारताच्या उभारणीतील अत्यंत अपरिहार्य व महत्त्वपूर्ण नाव आहे. प्रतिकूल परिस्थितीत जन्माला येऊनही नव्या युगावर आपली अमिट प्रतिमा अंकित करण्याचे ललामभूत सामर्थ्य त्यांच्या प्रतिभेत एकवटले होते. अस्पृश्यतेचे चटके सहन करून त्यांनी आपले शिक्षण पूर्ण केले. ज्या विद्यार्थ्याला वर्गाच्या बाहेर बसून शिक्षण घ्यावे लागले; प्यायला कुणी पाणी देत नव्हते तो हा बालक एके दिवशी भारताचा भाग्यविधाता ठरेल असे भविष्य कुणी वर्तविले असते तर कुणालाही खरे वाटले नसते. पण, अनन्वित वंचना सहन करून भीमरावांनी समस्त शोषित-उपेक्षितांच्या जीवनाला नवा अर्थ दिला. त्यांना माणूसपण दिले. कुजलेल्या निष्ठूर व्यवस्थेशी दोन हात करण्याची क्षमता प्रदान केली.

भारत मातेच्या या महान सुपुत्राचा जन्म अस्पृश्य समाजातील एका सर्वसामान्य कुटुंबात १४ एप्रिल १८९१ रोजी झाला. भीमरावांचे वडील रामजी मालोजी सपकाळ हे सैन्यात सुभेदार होते. त्यामुळे घरातही सैनिकी शिस्त होती. सुभेदारांचा शिक्षणावर भर होता. भीमरावांनी शिक्षण घेऊन समाजासाठी काही तरी करावे ही भावना त्यांनीच बालपणापासून रुजवली. भीमराव सहा वर्षांचे असताना आईचे छत्र हरवले. पुढे त्यांचा सांभाळ आत्या मीराबाई यांनी केला.

अस्पृश्यतेचे चटके सहन करत, उच्चवर्णीयांकडून होणारी अवहेलना सहन करूनही, पराकोटीची जिद्द आणि कठोर परिश्रम यांच्या जोरावर प्रतिकूल परिस्थितीवर मात करत भीमरावांनी अखंड ज्ञानसाधना केली. अमेरिकेतील कोलंबिया या नावाजलेल्या विद्यापीठात १९१५ साली एम. ए. व १९१७ साली पीएच. डी. या पदव्या संपादन केल्या. १९२३ साली इंग्लंडमधील जगप्रसिद्ध 'लंडन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स' मधून 'डॉक्टर ऑफ सायन्स' आणि लंडनच्या 'ग्रेज इन' मधून बॅरिस्टरची पदवी अशा सर्वोच्च पदव्या प्राप्त केल्या.

आपले शिक्षण पूर्ण करून डॉ. आंबेडकर भारतात परत आले. त्यानंतर त्यांच्या सामाजिक आणि राजकीय जीवनाला प्रारंभ झाला. हा काळ साधारणपणे १९२० चा होता. १९५६ पर्यंत त्यांनी भारतीय समाजव्यवस्थेवर आपली स्वतंत्र मुद्रा उमटविली. विविध क्षेत्रातील त्यांचे योगदान अतुलनीय असे आहे. भारतातील ब्रिटिश साम्राज्याच्या शेवटच्या कालखंडात सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आणि राजकीय परीवर्तन घडवून आणण्यात डॉ. आंबेडकर अग्रेसर होते; तर स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर भारतीय राज्यघटनेचे शिल्पकार म्हणून आधुनिक भारताच्या पायाभरणीसाठी आपले सर्वस्व अर्पण केले. आधुनिक भारताच्या उभारणीत त्यांनी दिलेले योगदान अनन्यसाधारण आहे. मूलगामी स्वरूपाचे असे कार्य त्यांनी केले. त्यांच्या ऐतिहासिक आणि अलौकिक कामगिरीला बळकटी प्राप्त झाली ती त्यांच्यातील विद्वत्तेमुळे. या ज्ञानसूर्याला दिशांचेही बंधन उरले नव्हते. अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राज्यशास्त्र यापासून तर कायदा, इतिहास मानववंशशास्त्र आणि धर्मशास्त्र यांच्यापर्यंत अनेक ज्ञानशाखांमध्ये भराऱ्या घेऊन त्यांनी त्यात मोलाची भर घातली. त्यांनी मांडलेले विचार, सिद्धांत यांना जगात मान्यता मिळाली. अर्थतज्ज्ञ, शिक्षणतज्ज्ञ, कायदेपंडित, पत्रकार, संसदपटू, समाजसुधारक, राजकीय मुत्सद्दी आणि बौद्ध धम्माचे पुनर्जागरण करणारे प्रवर्तक म्हणून ते समस्त मानवजातीला परिचित झाले. भारतीय इतिहासात त्यांनी केलेल्या कार्यामुळे त्यांनी एक वेगळा ठसा उमटविला.

डॉ. आंबेडकरांना केवळ दलितांचे पुढारी संबोधने मोठे अन्यायकारक ठरेल. दलितांसाठी त्यांनी मुक्तीचा मार्ग दाखविला यात शंकाच नाही. त्यांच्यामुळेच युगानुयुगीं अन्याय, अज्ञान आणि अत्याचारात खितपत पडलेल्या दलितांचा उद्धार संभवू शकला. पण, त्यांची ही कामगिरी एवढ्यापुरती मर्यादित नव्हती, तर ते व्यापक मानवी हक्काचे कैवारी होते. ते राष्ट्रीय बाण्याचे धोरणी नेते होते. राजकीय चळवळींचे नेतृत्व करणाऱ्या इतर नेत्यांपेक्षा डॉ. आंबेडकरांचे राष्ट्रीयत्व खूप निराळे होते. देशाच्या स्वातंत्र्याबद्दलची त्यांची धारणा ही ब्रिटिशांकडून राजकीय सत्ता खेचून घेऊन ती भारतीयांच्या हवाली करणे एवढ्यापुरती मर्यादित नव्हती. स्वातंत्र्य, समता आणि बंधुत्व या तत्त्वत्रयींवर आधारित जातिविरहित, वर्गविरहित आणि लोकशाहीप्रणीत नवसमाजाची निर्मिती हा त्यांचा ध्यास होता आणि तोच त्यांचा राष्ट्रीयत्वाचा मूलाधार होता. म्हणूनच आधुनिक भारताच्या सामाजिक सद्सद् विवेकबुद्धीचा मानदंड म्हणजे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर!

डॉ. आंबेडकरांचा मूळ पिंड हा विचारवंत व संशोधक लेखकाचा होता. त्यांच्या 'कास्ट इन इंडिया' (१९१६) या पहिल्या शोधनिबंधापासून तर 'दि बुद्धा एण्ड हिज धम्मा' (१९५७) या अखेरच्या ग्रंथापर्यंत अनेक शोधग्रंथ, शोधनिबंध-प्रबंध त्यांनी सिद्ध केले. यामध्ये 'हू वेअर दी शूद्राज' (१९४६) त्याचाच उत्तरार्ध 'दि अनटचेबल्स, हू वेअर दे?' (१९४८) हा शोधग्रंथ. मधल्या काळातील, 'स्टेट्स एण्ड मायनारिटीज', 'बुद्ध एण्ड कार्ल मार्क्स', 'जातीची राजकीय समस्या व उपाय' इत्यादी कितीतरी शोधनिबंध त्यांनी लिहिले आहेत. या संशोधनपर ग्रंथांमधून एक चिंतनशील विचारवंत, तत्त्वज्ञानी, बुद्धिवादी चिकित्सक व तर्कशुद्ध लेखन करणारे, बुद्धिप्रामाण्यवादी साधार विचार मांडणारे, बिनतोड युक्तिवाद करणारे श्रेष्ठ संशोधकाचे दर्शन घडते. अगदी खोलवर तळापर्यंत विषयातील बारकाव्यांचा ते अत्यंत काळजीपूर्वक वेध घेताना दिसतात.

त्यांनी आपल्या विचारांना कृतीची जोड दिली. केवळ अस्पृश्यतेचा प्रश्न मांडला नाही तर त्यांच्या मुक्तीसाठी लढा दिला. महाडचा चवदार तळ्याचा सत्याग्रह, नाशिकमधील काळाराम मंदिर सत्याग्रह हे दोनही सत्याग्रह दीर्घकाळ सुरु ठेवले. यातून सामान्य जनतेमध्ये जागृती घडवून आणली. विविध परिषदा-आंदोलने यातून जनजागृतीचे मोठे कार्य केले. भारतीय महिलांसाठी त्यांनी हिंदू कोड बील आणले. पण, त्यास विरोध झाल्यामुळे त्यांनी आपल्या मंत्रिपदाचा राजीनामा दिला. शिक्षणकार्यासाठी महाविद्यालये निर्माण केली. भारतीय राजकारणातही उपेक्षित समाजाची वज्रमूठ निर्माण केली. कामगारांचे लढे उभारले. त्यांच्यासाठी कायदेशीर तरतुदी केल्या.

कुणालाही सहज प्रश्न पडावा एक उण्यापुऱ्या आयुष्यात एखाद्या माणसाने किती मोठे कार्य करावे? बाबासाहेब आंबेडकर यांच्यासारखे युगप्रवर्तक व्यक्तिमत्त्व क्वचितच निर्माण होतात. आपल्या अगाध बुद्धिसामर्थ्याच्या बळावर त्यांनी अनेकांची आयुष्ये उजळून टाकली. लक्षलक्ष जीवांना त्यांनी आपल्या प्रकाशाने तेजाळून टाकले. असा महापुरुष या भारतभूमीवर जन्माला आला हे आपण सर्व भारतवासीयांचे भाग्य आहे. त्यांचे केवळ नामस्मरण न करता त्यांनी दाखविलेल्या ज्ञानाच्या मार्गावर आणि समता-स्वातंत्र्य-बंधुभाव-न्याय-करुणा या तत्त्वांचे प्रत्यक्ष जीवनात जीवनात आचरण करणे हीच खरी त्यांच्याप्रती कृतज्ञता ठरेल!

✿ डॉ. सुनिल रामटेके
सहयोगी प्राध्यापक मराठी विभाग

'आज़ादी के 75 वर्ष: दलित चेतना का विकास' विषय पर ऑनलाइन राष्ट्रीय व्याख्यान संपन्न.."

'जश्न-ए-आजादी: अमृत महोत्सव' राष्ट्रीय व्याख्यानमाला के नववें पुष्प का आयोजन हिंदी विभाग, इक्वल ऑपरच्यूनिटी सेल एवं राष्ट्रीय सेवा योजना(NSS) के संयुक्त तत्वावधान में IQAC के संयोजन में 30 अप्रैल 2022 को 'आजादी के 75 वर्ष:दलित चेतना का विकास' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय के देशबंधु कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने दलित चेतना के विकास पर बात रखते हुए कहा कि भारत में दलित चेतना के मूल उत्स बौद्ध आंदोलन में देखे जा सकते हैं, साथ ही उन्होंने मध्यकालीन संत कवियों की रचनाओं में अखिल भारतीय स्तर पर दलित चेतना के स्वर को रेखांकित किया। डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी जी ने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान दलित चेतना के विकास की बात करते हुए आजादी के बाद की नयी पीढ़ी के दलित चेतना के उन्नायकों एवं दलित रचनाकारों के योगदान की चर्चा की।

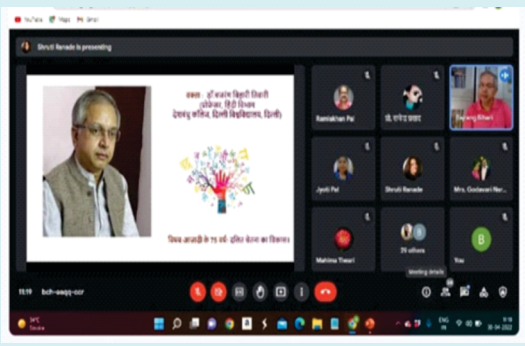

इस व्याख्यान में एस.एन.डी.टी.महिला विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता साखरे मैडम ने भी अपने विचारों से व्याख्यान को सार्थक बनाया।

भारतीय स्त्री शिक्षणाचे शिल्पकार भारतरत्न महर्षी धोंडो केशव कर्वे

महर्षी धोंडो केशव कर्वे यांचा जन्म १८ एप्रिल १८५८ रोजी झाला. मुले जगत नसल्याने त्या काळाच्या पद्धतीप्रमाणे महर्षींच्या आईवडलांनी त्यांचे नाव धोंडू असे ठेवले. महर्षींच्या आईचे नाव सौ लक्ष्मीबाई आणि वडील श्री केशव उर्फ केसोपंत. वडील बंधू भिकाजीपंत आणि धाकट्या भगिनी श्रीमती अम्बाताई. दोन्ही भावंडे सालस आणि सद्गुणी. श्रीमती अम्बाताई महर्षींच्या कार्याचे मोल जाणून त्यांना वेळोवेळी आपल्या कुवतीनुसार सहकार्य करीत.

महर्षींचा जन्म खरेतर कोकणातील शेरवली गावी त्यांच्या आजोळी झाला होता. तरी मुरूडलाच ते आपली जन्मभूमी मानत असत. मुरूड हे दापोली तालुक्यातील समुद्रकिनारी वसलेले निसर्गरम्य गाव. महर्षी कर्वे यांच्या पूर्वजांना हे गाव वतन म्हणून मिळाले होते. महर्षींच्या बालपणी मुरूड हे विद्वानांचा गाव म्हणून प्रसिद्ध होते. महर्षींच्या जडणघडणीत या गावाचा मोठा वाटा आहे. मुरूड गावाची रचना करताना महर्षींच्या पूर्वजांनी गावाच्या मध्यभागी दुर्गादेवीचे मंदीर बांधले. महर्षींच्या सार्वजनिक कार्याची सुरुवात याच देवळात झाली. शाळेत असताना आपले गुरुजी सोमण मास्तर यांच्या सांगण्यावरून संध्याकाळी दर्शनाच्या वेळी याच देवळात बसून महर्षी गावकऱ्याना वर्तमानपत्रे वाचून दाखवत असत.

समाजकार्याचा दुसरा धडाही त्यांना याच काळात मिळाला. सोमण गुरुजींनी व्यापारोत्तेजक मंडळी स्थापन केली आणि सामायिक भांडवलावर दुकान सुरु केले. हे दुकान कर्वे यांनी दरमहा तीन रुपये पगार घेऊन चालवावे असे ठरले. हा उद्योग यशस्वी झाला नाही. आपल्या चुकीची भरपाई म्हणून महर्षींनी गुरुजींच्या नकळत २५ रुपयांची कर्जफेड सव्याज केली.

त्या काळातील पद्धतीनुसार महर्षी कर्वे यांच्या शिक्षणाची सुरुवात शेणवी पंतोजींच्या शाळेपासून झाली. त्या शाळेत सहा महिने शिकून नंतर महर्षी मुरूडच्या सरकारी शाळेत जाऊ लागले. या शाळेत महर्षींचे इयत्ता सहावीपर्यंतचे शिक्षण झाले. शिक्षण पूर्ण झाल्यानंतर रिकाम्या वेळेत महर्षी या शाळेत बिनपगारी शिकवत असत. त्या काळात गावात वेदशाळा असत. भिक्षुकीचा व्यवसाय करू इच्छिणारी ब्राह्मण मुले त्या शाळेत जात असत. कर्वे यांच्या घराशेजारी एक वृद्ध वैदिक गृहस्थ वैश्वदेव, पुरुषसूक्त, सौर, पवमान इत्यादी शिकवत. आपल्या वडील बंधुंसह महर्षीनीही काही भाग शिकून घेतला होता. बालपणी महर्षी अनेक गोष्टी करीत. जसे, पत्रावळी लावणे,दिवाळीचे कंदील करणे, मेणकापडी छत्र्या बनवणे. तसेच आणखी एक काम म्हणजे चातीवर कापसाचे सूत कातून घरापुरती जानवी तयार करणे.

गणित हा महर्षींचा आवडता विषय. मराठी शाळेत असताना शाळेचा अभ्यास पूर्ण झाल्यानंतर रिकाम्या वेळात ते गणिताचा अभ्यास करीत. या विषयात त्यांना उत्तम गती होती, हे पुढे सिद्ध झाले. मुरूड गावातून ट्रेनिंग कॉलेजात शिकायला गेलेले मित्र सुट्टीत घरी आले की महर्षी त्यांच्याकडून अभ्यासाच्या नव्या गोष्टी शिकून घेत असत. त्यांचे मित्र काशीनाथपंत यांच्याकडून त्यांनी भांडारकरांचे संस्कृतचे पहिले पुस्तक शिकून घेतले होते.

महर्षींना शिक्षणाची मनापासून आवड होती. सहाव्या इयत्तेची परीक्षा देण्यासाठी त्यंनी खूप कष्ट घेतले. त्यांना इंग्रजी शिकायचे होते. पण मुरुडला त्याकाळी इंग्रजी शाळा नव्हती. सोमण गुरुजींच्या प्रयत्नांनी मुरुडला तात्पुरती इंग्रजी शिकण्याची सोय झाली. महर्षींची ही इच्छा पूर्ण झाली मुंबईच्या रॉबर्ट मनी स्कूलमध्ये. या शाळेत ते तीन वर्षे होते.

मेट्रिकयुलेशननंतर महर्षींनी विल्सन महाविद्यालयात प्रवेश घेतला. त्यसाठी विल्सनचे प्राचार्य डॉ मेकिकन यांनी त्यांना दरमहा आठ रुपये स्कॉलरशिपही दिली. प्रिव्हियसच्या वर्गात गणित व पदार्थविज्ञान या विषयातील सर्वाधिक गुणांसाठी महर्षींना बक्षीस मिळाले. प्रिव्हियस परीक्षा उत्तम रीतीने पास झाल्यावर महर्षी व त्यांच्या तीन मित्रांनी एल्फिन्स्टन महाविद्यालयात जायचे ठरवले. एल्फ़िन्स्टनचे त्यावेळचे प्राचार्य डॉ वर्डस्वर्थ यांनी त्यांची फी माफ केली. फर्स्ट बी ए च्या परीक्षेत महर्षींनी गणितात प्रथम क्रमांक मिळवला होता. १८८४ साली महर्षी बी ए झाले.

घरची आर्थिक स्थिती जेमतेम असल्याने महर्षींनी मराठी सहावीची परीक्षा पास झाल्यानंतर काम शोधायला सुरुवात केली. सरकारी नोकरी करायची नाही असा त्यांचा निश्चय होता. त्यांना पहिली शिक्षकाची नोकरी मिळाली ती मुरूडच्या मराठी शाळेत. त्यावेळी पगार होता पाच रुपये. रॉबर्ट मनी स्कूलात शिकत असताना त्यांनी शिकवण्या घेण्यास सुरुवात केली. १८८१ साली हिंदुस्थानातील मनुष्यगणती झाली तेव्हा महर्षींनी गणतीदाराचे काम केले आणि दुकानाचे कर्ज फेडले. विल्सन महाविद्यालयात असताना महर्षींनी अभ्यास सांभाळून शिकवण्या केल्या आणि वडिलांनी महर्षींच्या इंग्रजी शिक्षणासाठी मामांकडून (रेड्गलर परांजपे यांच्या वडलांकडून) घेतलेले कर्ज फेडले.

बी ए झाल्यानंतर महर्षींना एल्फिन्स्टन महाविद्यालयात एका वर्षाकरिता बदली शिक्षकाची नोकरी मिळाली. त्यानंतर महर्षींनी अनेक शाळांमध्ये शिकवले आणि शिकवण्याही केल्या. त्या शिकवण्यांचे त्यांचे वेळापत्रक महर्षींच्या आत्मवृत्तात पाहायला मिळते. त्यावरून महर्षींच्या कष्टांची कल्पना येते.

महर्षींची ही वणवण संपली ती त्यांना फर्ग्युसन महाविद्यालयातून निमंत्रण मिळाल्यामुळे. फर्ग्युसनमधील प्रो गोपाळ कृष्ण गोखले हे एल्फिन्स्टनमध्ये महर्षींचे सहाध्यायी होते. त्यांनी पत्र लिहून महर्षींना बोलावून घेतले. भिडस्त स्वभावाचे महर्षी राजारामशास्त्री भागवत यांच्या प्रोत्साहनामुळे पुण्याला जाऊन डेक्कन एज्युकेशन सोसायटीच्या मंडळीना भेटले आणि गणिताचे प्रोफेसर म्हणून महर्षींची नेमणूक झाली. १८९१ ते १९१४ ही सुमारे बावीस वर्षे महर्षी या संस्थेत कार्यरत होते.

उदरनिर्वाहासाठी कष्टाने मिळवलेल्या पैशातून एक ठराविक रक्कम समाजकार्यासाठी बाजूला काढण्याची सवय महर्षींनी सुरुवातीपासून लावून घेतली ती अखेरपर्यंत. महर्षींचे जीवन आणि समाजकार्य यात भेद नव्हता. प्रथम पत्नी राधाबाई हिच्या मृत्युनंतर त्यांनी समाजाचा विरोध पत्करून बालविधवा झालेल्या गोदुबाई जोशी हिच्याशी विवाह केला. ११ मार्च १८९३ रोजी महर्षी कर्वे यांच्याशी पुनर्विवाह झाल्यानंतर गोदुबाईच्या सौ आनंदीबाई उर्फ बाया कर्वे झाल्या. महर्षींच्या प्रत्येक कार्यात त्यांचा मनापासून सहभाग असे. त्या अत्यंत खंबीर आणि संसारदक्ष होत्या. अनेक गरीब आणि अनाथ मुलांचे पालकत्व घेऊन निस्वार्थ वृत्तीने त्यांचे संगोपन त्यांनी केले. महर्षी आणि आनंदीबाई हे कर्ते सुधारक होते. महर्षींनी स्वत:च्या भित्रेपणाचे वर्णन आत्मवृत्तात केले आहे. प्रत्यक्षात मात्र त्यांच्या आचरणात अनेक प्रसंगी असामान्य धैर्याचा प्रत्यय येतो.

३० डिसेंबर १९१५ रोजी भरलेल्या २९ व्या हिंदुस्थान राष्ट्रीय सामाजिक परिषदेत अध्यक्षीय भाषणं करताना महर्षींनी भारतातील शिक्षणाच्या स्थितीवर भाष्य केले आहे. महर्षी म्हणतात, " ...हिंदुस्थानातील समाजाची आज घटकेची गरज आहे शिक्षण....शिक्षणाची उणीव ही सगळीकडे पसरलेली कीड आहे आणि ती हिंदुस्थानातील सत्त्व गिळून टाकते आहे. समाजात अन्याय आहे, चुकीच्या गोष्टी रूढ आहेत, कारण समाज अज्ञानात खोल बुडाला आहे." त्यातही "हिंदुस्थानातील मुलींच्या आणि स्त्रियांच्या शिक्षणाचा प्रश्न मुळात नाजूक आणि कठीणच आहे. काही सामाजिक रूढी आणि गैरसमज यामुळे तो अधिकच बिकट झाला आहे." महर्षींना हे जाणवले होते. म्हणूनच त्यांनी १८८६ पासूनच स्त्रीशिक्षणाचे प्रयत्न सुरु केले होते.

त्या काळी विधवा स्त्रियांची परिस्थिती अत्यंत बिकट होती. त्यांना कोणत्याही स्वरूपाचे अधिकार नव्हते. विधवा स्त्रियांना स्वावलंबी करण्यासाठी त्यांना शिक्षण देणे आवश्यक आहे, ह्या विचाराने महर्षींनी हा प्रश्न हाती घेतला. आणि एक विधवागृह स्थापन करण्याचे ठरवले. त्याकरिता काही समविचारी मंडळींची बैठक घेऊन १४ जून १८९६ रोजी अनाथबालिकाश्रम मंडळीची स्थापना केली. डॉ सर रामकृष्णपंत भांडारकर हे अध्यक्ष व महर्षी चिटणीस होते. हा आश्रम शहराबाहेर शांत सुरक्षित जागी हलवावा असे महर्षींना वाटत होते. रा. ब. ग. गो. गोखले यांनी आपली हिंगणे येथील जमीन आश्रमाला दिली. १९०० साली त्या जागेवर रा. ब. गोखले यांच्याच देखरेखीखाली दगडमातीची एक लहानशी झोपडी बांधली आणि आश्रम तिथे हलवला.

आश्रम सुरु केल्यानंतर तो नीट चालावा आणि सुस्थितीत यावा यासाठी महर्षींनी खूप कष्ट घेतले. हिंगण्याला जायला चांगली गाडीवाट नव्हती. चालत जाण्याचा रस्ताही धड नव्हता. पावसाळ्यात तर सर्वत्र चिखल असे. तरीही रात्री बायकांना एकटे ठेवणे योग्य न वाटल्याने महर्षी रोज संध्याकाळी कॉलेज संपल्यावर आश्रमात जात आणि सकाळी परत येत असत. आश्रमासाठी लागणारे सामानसुमान बाया खरेदी करीत आणि महर्षी स्वत: ओझे वाहून नेत असत. याच काळात आश्रमासाठी वर्गणी जमवण्याकरिता महर्षींनी भ्रमंतीही केली. वर्गणी फारशी जमली नाही पण कार्याचा प्रसार झाला आणि आश्रमाला त्याचा पुष्कळ फायदा झाला. महर्षींच्या कार्याचा जसजसा प्रसार होऊ लागला तसतसे आश्रमाला अनेक पाठीराखे, हितचिंतक व देणगीदार मिळत गेले आणि १९०२ साली आश्रमाची पक्की इमारत उभी राहिली. विद्यार्थिनींची संख्या वाढली.

आश्रमात अविधवा विद्यार्थिनींची संख्याही वाढू लागली तेव्हा त्यांच्यासाठी वेगळी संस्था सुरु करण्याचा निर्णय महर्षींनी घेतला आणि ४ मार्च १९०७ रोजी स्वबळावर पुण्यात लकडी पुलाजवळच्या डेक्कन एज्युकेशन सोसायटीच्या ताब्यातील पडक्या वाड्यात सहा विद्यार्थिनींसह महिला विद्यालय सुरु केले. सोमण गुरुजी आणि महर्षी मिळून विद्यार्थिनीना शिकवू लागले. १९११ साली पुण्यात प्लेगची साथ आल्यामुळे विद्यालय तातडीने हिंगण्याला आश्रमाशेजारी नेण्यात आले. हिंगण्यास गेल्यावर विद्यालयाची वाढ झपाट्याने झाली. लवकरच महिला विद्यालय स्वत:च्या नव्या इमारतीत हलवण्यात आले. त्याला बोर्डिंग शाळेचे स्वरूप प्राप्त झाले.

स्वार्थत्यागाच्या तत्त्वावर स्त्रीशिक्षणाचे काम चालविणारे कार्यकर्ते संघटित करण्याच्या हेतूने ख्रिस्ती मिशनच्या धर्तीवर निष्काम कर्म मठाची स्थापना झाली. पुढे महर्षींच्या इच्छेप्रमाणे अनाथबालिकाश्रम, महिला विद्यालय आणि निष्काम कर्म मठ या तीन संस्था एकत्र येउन डेक्कन एज्युकेशन सोसायटीच्या धर्तीवर महिलाश्रम ही संस्था निर्माण झाली. स्त्रीशिक्षणाचा प्रश्न व्यापक स्वरुपात हाती घेणे हे तिचे उद्दिष्ट बनले.

३० डिसेंबर १९१५ रोजी झालेल्या राष्ट्रीय सामाजिक परिषदेच्या अधिवेशनात अध्यक्षपदावरून केलेल्या भाषणात महर्षींनी जपानमधील महिला विद्यापीठाच्या धर्तीवर हिंदुस्थानात देशी भाषेतून शिक्षण देणाऱ्या महिला विद्यापीठाची कल्पना मांडली. श्री महादेव के. गाडगीळ आणि सौ पार्वतीबाई गाडगीळ हे निष्काम कर्म मठाचे आजन्म सेवक. या उभयतांनी महिला विद्यापीठाचे पहिले महाविद्यालय हिंगणे येथे सुरु करण्यासाठी दहा हजार रुपयांची पहिली देणगी दिली. ३ जून १९१६ रोजी महिला विद्यापीठाचा जन्म होऊन नामकरण झाले. २६ जून १९१६ रोजी पहिली प्रवेश परीक्षा घेण्यात आली. ५ जुलै १९१६ रोजी पाच विद्यार्थिनींचा पहिल्या वर्षाचा वर्ग सुरु होऊन भारतातील पहिल्या महिला विद्यापीठाच्या कामाला प्रारंभ झाला.

सर विठ्ठलदास ठाकरसी यांनी १९१९ साली महिला विद्यापीठाला दिलेल्या भरघोस देणगीमुळे विद्यापीठाला स्थैर्य प्राप्त झाले. त्यांच्या इच्छेनुसार विद्यापीठाचे मुख्य कार्यस्थळ मुंबई येथे हलवण्यात आले. श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी या सर विठ्ठलदास ठाकरसी यांच्या मातोश्री. देणगीच्या अटीनुसार यांचे नाव विद्यापीठाला देण्यात आले. विद्यापीठाच्या अभ्यासक्रमात शास्त्र, भूगोल, भाषा, गृहविज्ञान, ललित कला, शारीरिक शिक्षण, शिलाई काम इत्यादी अनेक विषयांचा समावेश होता.

स्त्रीशिक्षणाप्रमाणेच महर्षींनी मुरुडमधील पैसा फंडाचे व्यवस्थापन, मुरूडच्या श्रीदुर्गादेवी इस्टेटीची लोकोपयोगी व्यवस्था लावणे, मुरूडच्या मराठी शाळेची नवी इमारत बांधणे, मुरुडला इंग्रजी शाळा सुरु करणे, ब्राह्मण व ब्राह्मणेतर यांना एकत्र आणण्यासाठी स्नेहवर्धक मंडळीची स्थापना करणे, विधवाविवाहोत्तेजक मंडळीची स्थापना, पुनर्विवाहित कुटुंबांचे मेळावे भरवणे,

विधवा - विवाह - प्रतिबंध - निवारक मंडळीची स्थापना, जातीभेद निर्मूलनासाठी समता संघाची स्थापना इत्यादी समाज सुधारणेची अनेक कार्ये यशस्वीपणे पार पाडली. महर्षी एक ध्येयनिष्ठ आणि कार्यमग्न आयुष्य जगले. त्यासाठी त्यांनी स्वत:च्या आवडीनिवडी बाजूला ठेवल्या. त्यांनी गाणे ऐकले नाही, सिनेमा पहिले नाहीत, करमणुकीच्या कार्यक्रमांना गेले नाहीत. २९ नोव्हेंबर १९५० रोजी बाया निधन पावल्या. एका अस्सल सहजीवनाचा अंत झाला. पण महर्षींनी हाही आघात शांतपणे झेलला.

महर्षींना उत्तर वयात अनेक पुरस्कार मिळाले. चार विद्यापीठांनी त्यांना डी. लिट ही सर्वोच्च पदवी प्रदान करून त्यांचा सन्मान केला. त्यांच्या जन्मशताब्दीच्या निमित्ताने भारत सरकारने "भारतरत्न" हा सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान करून त्यांच्या कार्याचा गौरव केला. याशिवाय महानगरपालिका आणि इतर अनेक संस्थांनी महर्षींच्या कार्याचा गौरव केला. महर्षींच्या सन्मानार्थ टपाल खात्याने तिकीट व पाकीट प्रसिद्ध केले. महर्षींच्या शताब्दीपूर्तीच्या निमित्ताने ब्रेबोर्न स्टेडीयमवरील भव्य सोहळा आयोजित केला होता. या सोहळ्यासाठी भारताचे त्यावेळचे पंतप्रधान जवाहरलाल नेहरू, श्री यशवंतराव चव्हाण आणि श्री शंकरराव चव्हाण यांच्यासह अनेक मान्यवर उपस्थित होते. विशेष म्हणजे या सोहळ्यासाठी प्रचंड जनसमुदाय स्वेच्छेने ब्रेबोर्न स्टेडीयमवर लोटला होता.

महर्षींना परमेश्वरी कृपेने दीर्घायुष्य लाभले. स्त्री शिक्षणाच्या आपण रोवलेल्या बीजाचा महावृक्ष झालेला त्यांनी पहिला. आपल्या हजारो नाती आणि पणती त्या महावृक्षाची फळे चाखताना पाहण्याचे समाधान त्यांना मिळाले. त्यांच्या आयुष्यात त्यांना अनेक सहकारी, मित्र व देणगीदार लाभले. त्यांचा परिवार विस्तारला. मीपण विसरून वसुधैव कुटुंबकम् वृत्तीने सुरु केलेल्या कार्याला लाभलेली अक्षय प्रतिष्ठा पाहण्याचे सुख त्यांनी अनुभवले.

दिनांक ९ नोव्हेंबर १९६२ रोजी या प्रदीर्घ तपाचरणाची सांगता झाली.

डॉ. अरूणा श्री. दुभाषी
विभाग प्रमुख, मराठी विभाग, मुंबई

ગુજરાતી વિભાગનો પરિચય

'સંસ્કૃતા સ્ત્રી પરાશક્તિ સ્વર હમારા હૈ' સ્વરગૂંજન સાથે સ્વપ્નદ્રષ્ટા ભારતરત્ન મહર્ષિ ધોંડો કેશવ કર્વેએ સર શ્રી વિઠ્ઠલદાસ ઠાકરસી પાસેથી આર્થિક અનુદાન મેળવી ઇ.સ. ૧૯૧૬માં શ્રીમતી નાથીબાઇ દામોદર ઠાકરસી (એસ.એન.ડી.ટી.) મહિલા વિદ્યાપીઠની સ્થાપના કરી. સ્ત્રીને કેળવવી, તેની બહુમુખી પ્રતિભાનું ઘડતર કરવું, એમનામાં રહેલી અભિવ્યક્તિક્ષમતાને પ્રોત્સાહિત કરી સમાજમાં તેને ઉચ્ચ દરજ્જો આપવો એ મહર્ષિ કર્વેનું જીવનસ્વપ્ન હતું. એમનું સ્પષ્ટ માનવું હતું કે, 'સ્ત્રીસામર્થ્ય વગર કોઈપણ રાષ્ટ્ર ઉન્નતિનાં ઉચ્ચશિખરો સર ન કરી શકે. શિક્ષિત અને સામર્થ્યવાન આદર્શ નારી થકી જ આદર્શ સમાજની રચના થઈ શકે.' આવી ઉદાત્ત ભાવના સાથે આ મહિલા વિદ્યાપીઠની સ્થાપના થઇ . આજે એકસો છ વર્ષ પૂર્ણ કરનાર આ વિદ્યાપીઠની યશગાથાની માત્ર કલ્પના કરું છું ને છાતી ગદગદ ફૂલે છે... સાથોસાથ ભારતનાં વિશ્વવિદ્યાલયોમાં પ્રથમ હરોળમાં ગૌરવભેર ઊભી રહેનાર આ વિદ્યાપીઠનાં ગુજરાતી વિભાગમાં અધ્યાપકીય કાર્ય કરવાની તક સાંપડી એનાથી અમારી જાતને ધન્ય માનીએ છીએ .

એસ.એન.ડી.ટી. મહિલા વિદ્યાપીઠના ગુજરાતી વિભાગ (સ્નાતક/અનુસ્નાતક)ની સ્થાપના ઇ.સ. ૧૯૫૧માં થઈ. ઇ.સ. ૧૯૮૪થી અનુસ્નાતક ગુજરાતી વિભાગ સ્વાયત્ત થયો. જેના પ્રથમ અધ્યક્ષ હતા શ્રી હિમતલાલ અંજારિયા. વિભાગની પ્રારંભિક સફળતાને યાદ કરું છું ત્યારે આ વિદ્વાન અધ્યાપકને સાદર નમન કરવાનું મન થાય છે. ત્યારબાદ ગુજરાતી સાહિત્યના સર્જક અને વિવેચક શ્રી રામનારાયણ વિશ્વનાથ પાઠક વિભાગનું સુકાન સંભાળે છે. જેમણે ખરા અર્થમાં 'ડ્રિરેફ'ની જેમ ભારતીય ભાષા અને સાહિત્યની અંદર જે કંઈ શ્રેષ્ઠ છે એનું ગૌરવ કરીને ગુજરાતી ભાષા અને સાહિત્યને તો ખરું જ પણ એમની સર્જકીય પ્રતિભાથી ગુજરાતી વિભાગને પણ મુંબઈ તથા સમગ્ર ગુજરાતમાં ગૂંજતું કર્યું. એ પછી આ જ પરંપરામાં ગુજરાતી ભાષાના સુપ્રસિદ્ધ કવિ અને કર્તવ્યનિષ્ઠ અધ્યાપક શ્રી સુંદરજી બેટાઈ તથા સુ શ્રી અનસૂયા બહેન ત્રિવેદીએ વિવિધ સાહિત્યિક પ્રવૃત્તિઓથી વિભાગને સક્રિય રાખ્યો. ત્યારબાદ ગુજરાતી સાહિત્યના સુપ્રસિદ્ધ કવિ, નિબંધકાર, અને વિવેચક ડો. સુરેશ દલાલની અધ્યક્ષતામાં વિભાગે નવા નવા આયામો સિદ્ધ કર્યા. એમના માર્ગદર્શન હેઠળ વિભાગે અધ્યયન-અધ્યાપનની સાથોસાથ પ્રકાશનક્ષેત્રે પણ સફળતાનાં શિખરો સર કર્યા. એમના અથાગ પુરુષાર્થ થકી સંશોધન કાર્યને પ્રોત્સાહન મળી રહે અને સંશોધનની દિશામાં ઊંડાણપૂર્વકનું કાર્ય થાય એ હેતુસર UGC દિલ્હીની આર્થિક સહાયથી ઈ.સ. ૧૯૯૭-૯૮થી વિભાગમાં SAP-DRS-I પ્રકલ્પનો પ્રારંભ થયો. જે આજે એકવીસમાં વર્ષે પણ એ જ ગતિમાં SAP-DRS-III સફળ રીતે પૂર્ણ થયો છે. સાથોસાથ શ્રી ધીરજલાલ મોદી, શ્રી બળવંતરાય પારેખ, શ્રી મહેન્દ્ર ભગત, એક્સેલ, એમ વિવિધ વ્યાખ્યાનમાળાઓનો પ્રારંભ કરી સુરેશભાઈએ સાહિત્યક્ષેત્રે પણ વિભાગને ઝળહળતો રાખ્યો. સુરેશભાઈની સાહિત્ય પ્રત્યેની પ્રામાણિક નિસ્બત, વિભાગ માટેની પ્રતિબદ્ધતા તથા અભ્યાસનિષ્ઠા થકી આજે પણ વિભાગ શિક્ષણ જગતમાં ગૌરવભેર ઊભો છે. એ પરંપરાને સફળ રીતે આગળ ચલાવે છે ડો. નલિની માડગાંવકર. કર્મનિષ્ઠ તથા સાહિત્યનિષ્ઠ શ્રી નલિનીબહેનની અધ્યક્ષતામાં વિવિધ સાહિત્યિક પ્રવૃત્તિઓ તથા પુસ્તક પ્રકાશનોનું કાર્ય ખૂબ સફળ રીતે આગળ ચાલે છે. સર્જકનો શબ્દ જ્યારે ભાષાના સીમાડા ભૂંસી અન્ય ભાષાના સાહિત્ય સુધી પહોંચે ત્યારે તે રાષ્ટ્રીય એકતાનું અને સાહિત્યની આદાન-પ્રદાન પ્રવૃત્તિનું મહત્વનું પગલું ગણાય છે. આ ભાવનાને શ્રી નલિનીબહેને એમના કાર્યકાળ દરમ્યાન સાર્થક કરી બતાવી છે. ત્યારબાદ અધ્યક્ષ ડો. નૂતન જાનીની વિભાગ પ્રત્યેની પ્રતિબદ્ધતા અને એમના અભ્યાસનિષ્ઠ વ્યક્તિત્વનો લાભ પણ વિભાગને ઘણાં વર્ષો મળ્યો . વિદ્યાર્થીલક્ષી પ્રવૃત્તિઓ દ્વારા વિભાગને જીવંત રાખી પરંપરાને ટકાવી રાખવાના એમના ભગીરથકાર્યને વિભાગ ક્યારેય ભૂલી નહિ શકે... ત્યારબાદ કાર્યકારી અધ્યક્ષ ડો. સત્યદેવ ત્રિપાઠી તથા ડો.વિભૂતિબહેન પટેલનાં કાર્યને પણ આ તકે યાદ કરીએ છીએ... જેમની સ્વાધ્યાયનિષ્ઠા અને અધ્યયનશીલતાની હૂંફ સદા વિભાગને મળતાં રહ્યાં. ગુજરાતી વિભાગ બહુ આયામી શૈક્ષણિક , સાંસ્કૃતિક સ્થાન પ્રાપ્ત કર્યું છે વિદ્યાર્થીલક્ષી કાર્યક્રમો ,પરિસંવાદ , લેખન મંચ, પઠન મંચ, સાહિત્યિક સંગોષ્ઠી , ફિલ્મ અભ્યાસ, પુસ્તક પરિચય , સર્જક સાથે સંવાદ ,અશ્વજ્યોત વિદ્યાર્થી મંચ, અશ્વજ્યોત મહિલા થિયેટર, "સેતુ" સંશોધન વિદ્યાર્થીલક્ષી પ્રવૃત્તિ , "સંધાન" પ્રવૃત્તિ જે માતૃભાષાના સંવર્ધન , પ્રચાર , પ્રસાર માટે સતત પ્રયત્નશીલ રહે છે ."સિસૃક્ષા" પ્રવૃત્તિ બહેનોના વ્યક્તિત્વને ખીલવી આત્મવિશ્વાસ ઘડતર માટે સતત પ્રયાસ કરતાં એક નોખી પરંપરા ઊભી કરવામાં વિભાગ સફળ રહ્યો છે . બહેનોમાં વાંચન , મનન , લેખનની રસ –રુચિ વધે સાથે ટંકણ કળા , સંપાદન , પ્રૂફ વાંચન, વાક્યરચનાની ચીવટપૂર્વક તપાસણી,ચિત્રાંકન તેમ જ રોજગારલક્ષી , વ્યવસાય લક્ષી તક ઊભી થાય એ રીતે અભ્યાસક્રમ તૈયાર થાય છે , એસ .એન .ડી .ટી .મહિલા વિદ્યાપીઠનો ગુજરાતી વિભાગ રાષ્ટ્ર અને રાજ્ય કક્ષાએ ખ્યાત છે

અત્યારે અમારો ગુજરાતી વિભાગ એટલે કે ડૉ . દર્શના ઓઝા-અધ્યક્ષ , ડૉ . કવિત પંડ્યા અને અમારી વહાલી વિદ્યાર્થીની બહેનોના હાથમાં દીવો નથી મશાલ છે....પ્રગતિની મશાલ લઈ તેજગતિએ આગળ દોડી રહ્યો છે. અનેક આશા સાથે.... સપનાં સાથે...

✿ દર્શના ઓઝા
વિભાગ પ્રમુખ, ગુજરાતી વિભાગ, મુંબઈ

डॉ. विभूति पटेल का साक्षात्कार

डॉ. विभूति पटेल अर्थशास्त्री, शिक्षाविद्, नारी मुक्ति आंदोलन की पॉयोनियर, नारीवादी चिंतक लेखिका है। इन्होंने अपने कार्यों के साथ कर्तव्यनिष्ठा को जोड़कर नई पीढ़ी के सामने आदर्श खड़ा किया। वे नम्रतापूर्वक तरीके से अपना संदेश सहकर्मियों तक पहुँचाकर उनके मन-मस्तिष्क पर छा जाती है।

विभूति जी एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में २००४-२०१७ तक प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष रही हैं तथा २००५-२०१३ तक पी.जी.एस. की डायरेक्टर पद पर रही। इसके पहले १९८८-१९९२ तक रिसर्च सेंटर फॉर विमेंस स्टडीज (आर.सी.डब्ल्यू.एस) की डायरेक्टर रही।

प्र. - ०१ जब आप एस.एन.डी.टी. के आर.सी.डब्ल्यू.एस की डायरेक्टर थी, तब आप लोग महिलाओं से जुड़े प्रश्नों पर किस तरह काम करते थे?

उत्तर - आप तो जानती ही है, महिला आंदोलन के कारण ही भारत में सबसे पहले महिला अध्ययन विभाग महर्षि कर्वे द्वारा स्थापित हमारे एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय में खुला। डॉ. नीरा देसाई के अनूठे प्रयासों के कारण यह सम्भव हो सका। जब मैं इस पोस्ट पर आई, तब इस विभाग का महिला आंदोलन के साथ एक गहरा रिश्ता था। उस समय बहुत बड़ा महिला आंदोलन भी चल रहा था। जब इंडियन विमेंस एसोसिएशन के कहने पर यू.जी.सी. को नोडल्स तैयार करना था, तो उन्होंने आर.सी.डब्ल्यू.एस. को चुना। मुझसे पहले मैत्रेयी कृष्णराज डायरेक्टर थी। एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय की कुलगुरु माधुरीबेन शाह जब यू.जी.सी. की चेयरमेन बनी, तब १९८४ में हमारे यहाँ रिसर्च सेंटर बना। उस समय आर.सी.डब्ल्यू.एस. के पास पैसे नहीं थे, पर लोगों में उमंग थी। लगातार सेमिनार होते थे, कभी-कभी राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम हुआ करते थे। ५०-६० मोनोग्राफ सीरिज, नारी मुक्ति आंदोलन से संबंधित सीरिज थी। सॉइक्लोस्टाइल करके ऐसे कई सीरिज तैयार कर पाँच-पाँच सौ कॉपियाँ बनाकर बांटते थे। देश में कई नये-नये महिला अध्ययन के सेंटर खुल रहे थे। वहाँ भी एस.एन.डी.टी. के आर.सी.डब्ल्यू.एस. द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भेजी जाती थी और उनकी मांग भी बहुत थी। इन पब्लिकेशन द्वारा देश के सभी नये सेंटर को दृष्टि देने का कार्य हमारे विश्वविद्यालय ने किया ।

प्र. - ०२ जब आप आर.सी.डब्ल्यू.एस. की डायरेक्टर बनी, तो आपने कौन-कौन से कार्य किये?

उत्तर - १९८८ में जब मैं डायरेक्टर बनी तो आते ही मुझे संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ एस.एन.डी.टी. के आर.सी.डब्ल्यू.एस. को विसिविल्टी ऑफ विमेंस इन नॉन प्रोडेक्टिव फील्ड का आंकड़ा तैयार करने का काम मिला। जो बहनें कृषि उद्योग में है, डेयरी उद्योग में है, उनके श्रम को नहीं आंका जाता था। इसी तरह आदिवासी बहनों के श्रम को भी श्रम नहीं माना जाता था। इन सभी बहनों के श्रम को दुनिया के सामने आंकड़ों द्वारा दिखाया गया। मैं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर को-ऑर्डिनेटर थी। हम इन पर सेंशन प्लान बनाते थे, वर्कशॉप लेने की योजना तैयार करते थे फिर उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्रियांवित करते थे। अंत में उसकी रिपोर्ट राष्ट्रसंघ को सौंपते थे। इसी तरह इंडियन विमेंस स्टडीज का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्यूज लेटर निकलता था। प्रो. रोहिणी गण्हाणकर उसकी संपादक थी। मैं उसकी संपादकीय लिखती थी। इसी तरह एच.आर.डी., यूनिसेफ और डब्ल्यू.डी.एस. का आठ राज्यों के लिए 'चाइल्ड केयर फॉर इमेंसि पेंशन डेवलपमेंट' का काम करना था। मैंने महाराष्ट्र राज्य के लिए काम किया।

प्र. - ३ महर्षि कर्वे द्वारा स्थापित महिला विश्वविद्यालय का आपकी नजरों में क्या महत्ता है?

उत्तर - जब मैं ८० के दशक में इस विश्वविद्यालय से पीएच.डी. करना चाहती थी, तब मेरे पिताजी ने कहा था, एस.एन.डी.टी. से पीएच.डी. करने से अच्छा है, पढ़ाई छोड़ दो। पर आज यह विश्वविद्यालय २०० कोर्स चला रहा है। नर्सिंग, साइकोलॉजी, होमसाइंस और इंजिनियरिंग कॉलेज नम्बर वन पर है। लोग प्रवेश लेने के लिए तरसते है। जब मैं यहाँ पढ़ा रही थी मेरी कई छात्राएँ, जो को-एज्यूकेशन में पढ़ी थी, वे पोस्ट-ग्रेज्यूएट करने के लिए एस.एन.डी.टी. के अर्थशास्त्र विभाग में प्रवेश लेना चाहती थी। क्योंकि को-एज्यूकेशन में लड़कियों को महत्त्व नहीं मिलता। उन्हें लीडरशिप नहीं मिलती। पूरे व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता। सब जगह लड़कों को ही महत्त्व दिया जाता है। हमें सिर्फ सजावट के रूप में मेहमानों के स्वागत के लिए थाल रखने का काम या बुकें देने का काम तक सीमित किया जाता है जबकि यहाँ हमें पूरा फलने-फूलने का मौका मिलता है।

प्र. - ४ आज की छात्राओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगी?

उत्तर - हमारे एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय में यदि कोई सातवीं पास हो और ३५ वर्ष का हो, तो डिस्टेंट एज्यूकेशन के तहत प्रवेश-परीक्षा पास कर बी.ए. में दाखिला हो सकता है। फ्लेविया एगनिस, गायत्री सिंह जैसे लोगों ने यहाँ से पढ़ाई की। निर्मला सामंत प्रभावलकर जो मुम्बई की मेयर थी, बाद में महिला आयोग की अध्यक्ष थी। उन्होंने समाजशास्त्र में एम.ए. किया। हमें इन लोगों की तरफ देखकर आगे का भविष्य बनाना है। लड़कियों को सद्भावना, बहनापन बनाकर रखना है। नारीवादी एकता बनाकर रखनी है, स्पर्धा नहीं करनी है। मानवता नहीं खोनी हैं। आज छात्राओं पर दुनिया भर में हिंसा बढ़ रही है इस कारण पश्चिम के देशों की लड़कियाँ भी महिला विश्वविद्यालय की मांग कर रही है। जहाँ वे स्वतंत्रता के साथ अपनी पढ़ाई भी कर सकें और अपने व्यक्तित्व का विकास भी कर सकें।

✿ साक्षात्कार कर्ता
श्रीमती कुसुम त्रिपाठी,अतिथि प्राध्यापक, हिंदी विभाग

UNION OFFICE INAUGURATION

Inauguration of SNDT Women's University Employees Union Office at Juhu Campus was done in the august presence of Hon. VC Prof. Ujwala Chakradeo on 25th March 2022.

Inauguration of Legal Cell of SNDT Women's University

The Legal Cell of SNDT Women's University was inaugurated by DR. Rajendra Shinde (Member, Management Council) along with Hon. VC Prof. Ujwala Chakradeo. Legal Cell in the university is to be established to centralize all the disputes related to university and ensure timely action before concerned courts to safeguard the legal interest of the university.

Inauguration of PhD Cell of SNDT Women's University

The PhD Cell of SNDT Women's University was inaugurated in 4th of April, 2022 by Ms Sonali Rode, Joint Director, Joint Director, Higher Education, Government of Maharashtra, Mumbai in the presence of the Hon. Vice Chancellor, Prof Ujwala Chakradeo in the Churchgate campus of the University.

Prof Ruby Ojha, Hon. PRO- Vice Chancellor of SNDT Women's University, Registrar Dr. Vandana Sharma, Prof Pradnya Wakpainjan, Head of Affiliation Department and Dr. Manisha Madhava, In-charge PhD cell were present on the occasion. The PhD cell will look into activities relating to PhD programme of the University and will emerge as single point of contact for the PhD Programme. It will also work towards strengthening the PhD programme of the University along the lines of the National Education Policy, 2020.

Arcane Illusions 2022

The inaugural function of Arcane Illusions 2022- the inter-collegiate cultural extravaganza of Usha Mittal Institute of Technology, SNDTWU was held in the Maharshi Karve Auditorium of SNDT Juhu Campus on 25-26 March 2022.

The inaugural program was presided over by Dr. Ujwala Chakradeo, Honorable Vice-Chancellor of SNDTWU. Ms. Rupali Chakankar, Hon Chairperson of Maharashtra State Women's Commission was the Chief Guest of the function. In her presidential address, Hon madam Vice-Chancellor Dr. Chakradeo congratulated the students for being the living embodiment of Maharshi Karve's vision of empowered women who are excellent managers and multitaskers. Dr. Shikha Nema, Principal of Usha Mittal Institute of Technology implored the students to dream big and preserve to fulfill their dreams. Usha Mittal Institute is the pioneering all-girls institute of technology for women celebrating 25 years of establishment. The students and alumnae of the institute have been earning laurels for the institute across the globe. To commemorate the Silver Jubilee year various technical and nontechnical programs were organized by the institute throughout the year. The events conducted include,technical workshops, symposiums, and walkathonsthon to create awareness about fitness and health. The star event of the celebration is the two-day cultural extravaganza- Arcane Illusion which saw the footfall of over 1000 students and was graced by stars from Bollywood.

क्रांति ज्योति महात्मा फुले

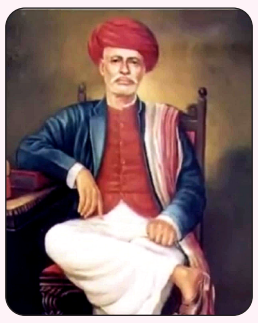

आज हम जिस समय में रह रहे हैं वहाँ चारों ओर शिक्षित, सभ्य, सम्पन्न, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व से परिपूर्ण महिलाएं हर क्षेत्र में दिखाई देती हैं। एक समय था कि महिलाओं को कई सदियों तक शिक्षा से वंचित रखे जाने की परम्परा थी। स्त्री शिक्षा मात्र राजसी और शाही स्त्रियों तक सीमित थी। सदियों से शिक्षा से वंचित साधारण वर्ग की स्त्रियों के लिये एक मसीहा, ज्योतिराव गोविंदराव का जन्म महाराष्ट्र की धरती पर एक फुले दम्पत्ति के घर में 11 अप्रैल, 1827 में हुआ। ज्योतिबा की शिक्षा स्थानीय स्कॉटिश मिशन हाई स्कूल में हुई। स्कूल में रहते हुए उन्होंने शिवाजी और जॉर्ज वाशिंगटन की जीवनी पढ़ी, जिससे उन्हें प्रेरणा मिली। वह थॉमस पेन के 'राइट्स ऑफ मैन' से भी काफी प्रभावित थे। उनका विवाह एक नौ वर्ष की बालिका सावित्रीबाई से हुआ था। उनकी पत्नी ने उनके आदर्शवादी विचारों का पूरा समर्थन किया। एक बार ज्योतिबा फुले एक ब्राह्मण मित्र की शादी में गए, जहां निम्न जाति का होने के कारण उनको बहुत अपमानित किया गया। इस घटना ने उन्हें जाति व्यवस्था के नाम पर छिपी हुई क्रूर और घृणित वास्तविकता का एहसास कराया और उन्होंने असमानता से लड़ने का संकल्प लिया।

ज्योतिबा फुले को अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था के उन्मूलन और महिलाओं को शिक्षित करने के प्रयासों के लिए जाना जाता है। वह और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले भारत में महिला शिक्षा के अग्रदूत थे। उनके द्वारा दिये गये अमूल्य योगदान के लिये हर साल 11 अप्रैल का यह दिन ज्योतिबा फुले जयंती के रूप में मनाया जाता है।

फुले ने १८४८ में पहला बालिका स्कूल स्थापित किया। उनके स्वप्न एवं उनकी आकांक्षाओं को साकार करने में उनका साथ उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने दिया और वे लड़कियों को पढ़ाने लगीं। लेकिन समाज यह मानने को तैयार नहीं था। लोगों ने फुले दम्पत्ति को घर छोड़ने के लिए विवश कर दिया। अनेक प्रकार से सामाजिक विरोध और बहिष्कार के बाद भी उन्होंने शिक्षण कार्य जारी रखा। सन 1851 में उन्होंने लड़कियों का एक बड़ा स्कूल शुरू किया, जहाँ वे स्वयं भी पढ़ाती थीं। उस स्कूल में लड़कियों को गणित, भूगोल, इतिहास आदि विषय पढ़ाए जाते थे।

निम्न जाति और किसानों को समानता के अधिकार दिलाने के लिये २४ सितम्बर १८७३ में उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना की । अस्पृश्यता की प्रथा का विरोध करने के लिए ज्योतिबा और उनकी पत्नी ने तथाकथित निचली जाति के लोगों को खुलेआम अपने घर में आने दिया और उन्हें अपने कुएं से पानी खींचने दिया। उन्होंने कभी इस बात की परवाह नहीं की कि दूसरे क्या सोचते हैं। वे एक कवि भी थे और अपने लेखन में वे समाज की संकीर्णता और ब्राह्मणों की चालाकी की आलोचना करते थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'स्लेवरी' (गुलामगिरी) को अमेरिका के अश्वेतों को समर्पित किया। उनकी पुस्तक 'सार्वजनिक सत्यधर्म' को सत्यशोधक समाज का मानक ग्रंथ माना जाता है। 'अछूत' अपील महात्मा फुले की एक अप्रकाशित पुस्तक है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई पुस्तकों, नाटकों, निबंधों, कथनों, पत्रों एवं पोवाड़ा आदि की रचना की। वह समानता, एकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित समाज का निर्माण करना चाहते थे।

उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया और विधवाओं की दयनीय दशा में सुधार के लिए बहुत प्रयत्न किए। ज्योतिराव फुले अपने समय से बहुत आगे की सोचने वाले एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करते थे।

मुंबई के महान सुधारक राव बहादुर विट्ठलराव कृष्णजी वंदेकर ने मई 1888 में ज्योतिराव फुले को मानवता के लिए उनकी निस्वार्थ सेवाओं के सम्मान में "महात्मा" की उपाधि दी। जुलाई 1888 में उनका स्वास्थ्य खराब हो गया और २८ नवंबर, 1890 में वे अनंत में विलीन हो गये। स्त्री शिक्षा के लिये किये गये अमूल्य प्रयत्नों, जाति व्यवस्था के उन्मूलन और पिछड़ी जातियों के लिये समानता जैसे कार्यों के लिये देश और मानवता उनकी सदा ही ऋणी रहेगी।

✿ डॉ.जितेंद्र कुमार तिवारी
विभाग प्रमुख, संस्कृत विभाग

ONLINE PROGRAM ON GROOMING & SOFT SKILLS

The guest Lecture program was organized by the Competitive Examination Information Center, S.N.D.T. Women's University in collaboration with the Department of sociology, S.N.D.T Women's University. on 15th March 2022 at 5 pm.

The program was organized on Grooming and Soft Skills.
The coordinator of the Competitive Examination Information Center, S.N.D.T. Women's University, Mumbai, Dr. Sujata Gokhale introduced the guest MS. Sanchi Bohra, Internationally Certified Soft Skills Trainer. Founder of Ikegai Education Labs.
The intern of the CEC Pratibha. Fernandez welcomed the guest with a welcoming speech. The program began with a short introductory video shared by the guest speaker. The speaker spoke about The Art and Science of Creating a First Impression with specific examples, and pictures in detail.
Ms. Sanchi Bohra shared her amazing views on how to prepare for an interview, some of the tips and tricks were shared with the participants.
The program continued with a fun interaction of questions and answers between the participants and the speaker. Some of the questions were asked by the intern of the CEC Sakshi. Sharma.
Last but not least the program ended by giving a vote of thanks by Diksha Kamble, intern of CEC.
It was a very informative session for all the participants.

15th Annual Art Exhibition of M.V.A. Department of Drawing and Painting

More than a week-long preparation for the exhibition came to an end and finally, the day arrived when it was made to be inaugurated by the guest's presence at S.N.D.T. Kanyashala, Girgaon and open for viewing by spectators on 21st April,2022.

Colourful rangoli was made at the entrance and a samayi was set for Inauguration in the main hall. Students and staff were dressed in traditional attires. Dr. Meera Sawant, H.O.D. and teaching staff welcomed Dr. Sonali Rode and Gargi Trivedi arrived with Dr. Rajendra Gurao, Principal at the gate. The lamp was lit in the Samayi as part of our tradition before beginning any program. Dr. Sawant ma'am, teachers, and students took the guests for a walk-through of the whole exhibition. Dr. Rode ma'am and Trivedi ma'am were extremely impressed with student's paintings and murals, they also asked students about their artworks, their processes, and the techniques used. Everyone then gathered in the Portraiture studio on the first floor to continue the Inauguration program further.

As the students settled down and guests were seated, B.V.A. Faculty Kalyani Jantikar, greeted everyone with a welcome speech which was followed by Dr. Meera Sawant's (H.O.D.) speech where she highlighted all the different activities carried by the B.V.A. and M.V.A. Department of Drawing and Painting during the 2021-22 Academic year, students and Faculty's achievements. Introduction of Guests was given and they spoke their heart out about their feeling about the exhibition, Department and student's Artworks. While applauding student's work, being a fashion designer Gargi Trivedi also talked about her experiences with designing not being very far from Fine Art and the similarities of both the genres. She wished students luck and also expressed her desire of conducting workshop at the Department in the future. Dr. Rajendra Gurao applauded students for doing such great artworks and exhibiting them so well despite very less period left for arrangements. Gurao Sir also congratulated teachers for their selfless efforts taken in conducting Departmental activities from time to time with enthusiasm and wished all luck for the future. Rode ma'am while applauding student's works, specifically took some student's names whose works touched her while walk through, out of them were M.V.A. student Shravani Chavan's work of 'Godhadi' titled 'Runanubandh' and some of the realistic works of Portraiture.

After the speeches of guests, English Faculty Boney Mondal announced the prize winners list, students were given certificates and Camlin Art materials as prizes for their best works by Guests. Prof Suresh Garud presented vote of thanks and the Inauguration ceremony was closed and exhibition was declared open for public viewing till 23rd of April 2022.

Retirement News

सौ. रागिणी राजेंद्र काटे या एस.एन.डी.टी कला वाणिज्य विज्ञान महिला महाविद्यालयातुन कार्यालय अधीक्षक या पदावरून 30 एप्रिल 2022 रोजी सेवानिवृत्त झाल्यात. त्यांनी जून 1987 पासून या महिला विद्यापिठात कनिष्ट लिपिक या पदावर सेवा सुरू केली होता. या प्रदीर्घ कालावधीत त्या विद्यार्थी कल्याण विभाग तसेच, कुलगुरू सचिवालयात ही कार्यरत होत्या.

Webinar series on Empowering Women with Digital Literacy Skills

SHPT School of Library science, a postgraduate department at SNDT Women's University received the 1000$ U.S. Federal Assistance Award from U.S. Consulate General, Mumbai. The grant was to organize a 4 part series of webinars on 'Empowering Women with Digital Literacy Skills' in collaboration with Dosti House: Your American Space.

The first session on 'Protecting Personal Information Online' was conducted on the Zoom platform on February 1 at 2:00 pm. Mrs. Sonali Patankar, Founder, Responsible Netism & President, Ahaan Foundation was the resource person for the first session. Hon. Vice-chancellor of SNDT Women's University Prof. Ujwala Chakradeo gave the opening remarks during the first session. Prof Ujwala Chakradeo in her speech gave a brief history of SNDT Women's University. Then she mentioned how important it is to secure ourselves against cyber violence. She mentioned that digital literacy is equally important as information literacy. Mrs. Sonali Patankar spoke about cyber violence against women by giving plenty of real-life examples. In her presentation, she gave examples of cybercrimes and helpline numbers available to report in case of cybercrimes.

In the second webinar on the topic 'Countering disinformation: Identifying real information' Mrs. Shweta Khanna Bhandral, Google Network India, Factshala Trainer addressed the gathering over the zoom platform on 15th February 2022. Mrs. Shweta gave an overview of what is misinformation and disinformation and explained the difference. She explained how to sense whether the news item or a forwarded message is fake or not and the motives behind spreading the false news.

The third session was hosted on 1st March on the topic 'From copyright to Copyleft': understanding the shift'. Prof. Anubhuti Yadav, from the Indian Institute of Mass Communication studies, addressed the participants over the various issues of copyright, open licenses, etc.

The last webinar in the series was on 'Digital literacy for Psychological Well-Being', by Dr. Swati Agarwal, founder partner of Gargi foundation. She spoke about the role of the therapist in creating awareness about digital literacy and its negative impact.
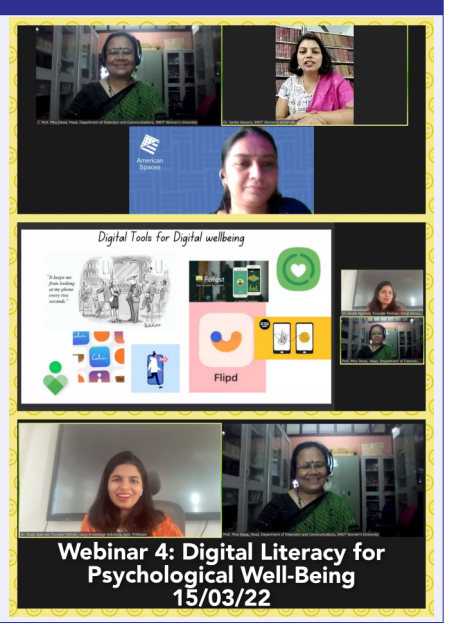
Prof. Mira Desai, HOD of Extension Education, SNDT WU was the moderator of all sessions which made sessions lively by asking vital questions to the speaker. Dr. Sarika Sawant & Mrs. Sitalakshmi Moopanar were the coordinators of the webinar series. For the webinar, series guidance was received from Pro-Vice-Chancellor Prof. Ruby Ojha & Dr. Subhash Chavan, director of BMK KRC SNDT Women's University.